अध्यक्ष महोदय : रामदास जी, अब आप समाप्त करिए। अभी सबको मालूम पड़ा है कि ऐसा कौन है।

...(व्यवधान)

श्री रामदास आठवले : अध्यक्ष महोदय,

"अटल जी, आडवाणी जी को खिलाओ सॉफ्ट हिन्दुत्व का आलू,

जार्ज फर्नांडीज़ नहीं है ज्यादा...*

उनके लिए काफी हैं हमारे लालू।"

इसलिए सोनिया जी ने जो अविश्वास प्रस्ताव रखा है, मैं उसका समर्थन करता हूं। आपको गरीबों के लिए, दलितों के लिए राज करना चाहिए। अटल जी, मेरी जैकेट का रंग भी नीला है और आपकी जैकेट का रंग भी नीला है। मेरी पार्टी का रंग नीला है लेकिन आपकी पार्टी का रंग नीला नहीं है। जब तक आपकी पार्टी का रंग नीला नहीं होता *...(व्यवधान)* आप जब तक सेकुलरिज्म नहीं सीखते हैं *...(व्यवधान)* इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि आपकी पार्टी का रंग नीला होना चाहिए। *...(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : अनपार्लियामैंट शब्द मैं रिकार्ड में से निकालूंगा। आरोप लगाने वाले शब्द भी मैं रिकार्ड से निकालूंगा।

...(व्यवधान)

श्री शिवाजी माने (हिंगोली) : अध्यक्ष महोदय, क्या यह हाउस में इस तरह की बात कहेंगे?

...(व्यवधान)

विद्युत मंत्री (श्री अनन्त गंगाराम गीते) : अध्यक्ष महोदय, संसद के जो आदर्श होने चाहिए, वे देश के सबसे *...(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : इस कविता में जो शब्द मुझे अच्छे नहीं लग रहे, जो नियम के अनुसार नहीं हैं, वे शब्द मैं निकालूंगा।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : रामदास जी, आप बैठिए क्योंकि प्रधान मंत्री जी बोल रहे हैं।

---

* अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार कार्यवाही वृत्तांत से निकाल दिया गया।

प्रधानमंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, मैंने अनेक अविश्वास प्रस्ताव देखे लेकिन ऐसा अविश्वास आज तक नहीं देखा। प्रस्ताव पेश करते समय या पेश करने के बाद चर्चा के समय जो दृश्य उपस्थित हो रहे हैं, वे सचमुच में अलग हैं।

रात्रि 11.00 बजे

कुछ मेल नहीं खाते हैं। लेकिन तरीका ऐसा ही है। आखिर जब पूछा गया कि यह अविश्वास प्रस्ताव क्यों लाया जा रहा है तो इसका कोई संतोषजनक उत्तर मुझे तो नहीं मिला। आप कह सकते हैं कि आपको उत्तर मिले; इसकी जरूरत क्या है। जो उत्तर को समझते हैं, उन्हें उत्तर दे दिया गया है। जब सरकार के पतन की स्थिति होती है तभी अविश्वास प्रस्ताव आता है, जब सत्तारूढ़ दल के टूटने की स्थिति होती है, तब अविश्वास प्रस्ताव का उपयोग किया जाता है। वैसे सामान्य स्थिति में भी सरकार को जागरूक रखने के लिए या अपने दृष्टिकोण की किसी विशेष बात को प्रकट करने के लिए अविश्वास प्रस्ताव का हथियार काम में लाया जाता है। लेकिन मैं समझ नहीं रहा हूं कि इस समय कौन सा उद्देश्य है। सरकार को तोड़ने का तो सवाल ही नहीं है क्योंकि सरकार टूटेगी नहीं। आप तोड़ना नहीं चाहते, यह अच्छी बात है, अंगूर खट्टे हैं, नहीं तो आपके द्वारा जितनी सरकारें बनी हैं टूटी हैं, उनकी संख्या कोई कम नहीं है। अभी तक हमारी यह मिली–जुली सरकार बची हुई है। लेकिन इसको अपदस्थ करने के लिए कोई नई रणनीति, दो दिन की जो चर्चा हुई है, उससे इस पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता।

जो नौ प्वाइंट की चार्जशीट लगाई गई है, उसके नौ सूत्र हैं और एक चार्जशीट है। दल एक–दूसरे के खिलाफ चार्जशीट लगाए, यह कुछ विचित्र सी परम्परा है। दलों में संवाद होना चाहिए, चर्चा होनी चाहिए। कोई अल्टीमेटम की भाषा नहीं बोलता कि हम आपको चार्ज कर रहे हैं क्योंकि आपने सैनिक सुरक्षा व्यवस्था खतरे में डाली है। यह साधारण चार्ज नहीं है, साधारण अभियोग नहीं है कि हमने सैनिक सुरक्षा व्यवस्था को खतरे में डाला है। दूसरा चार्ज है कि हमने राष्ट्रीय सुरक्षा को सम्पूर्णता में कमजोर किया है – इसका क्या मतलब है? सुरक्षा कैसे खतरे में पड़ी है। आंतरिक सुरक्षा को हमने कैसे दुर्बल कर दिया है। क्या इसके लिए कोई प्रमाण नहीं चाहिए, इसके लिए कोई सबूत नहीं चाहिए? क्या संसद में इस तरह से आरोप लगाए जा सकते हैं? मैं पूरे नौ प्वाइंट नहीं पढना चाहता। सरकारी क्षेत्र को खत्म करने का प्रयास ... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आपके लीडर उत्तर देंगे, हरेक को उत्तर देने की जरूरत नहीं है। वह उत्तर देंगी। उन्हें अंत में बोलने का अधिकार है।

...(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : स्टील अथॉरिटी का उसी दिन नवजीवन हुआ है, स्टील अथॉरिटी नए रूप में खड़ी हो गई है। उसका कोई आनंद नहीं।

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : किसका आनंद?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आनंद होना चाहिए। लेकिन कहा गया कि हम सब बर्बाद कर रहे हैं। बर्बाद करने के बाद भी लोग हमें यहां रख रहे हैं। यह तो आपके लिए कोई बहुत अच्छी बात नहीं है। *...(व्यवधान)* अध्यक्ष महोदय, मैं 1957 से पार्लियामेंट का सदस्य हूं। कभी भी विदेश नीति के सवाल पर खेमे नहीं बने।

श्री मणि शंकर अय्यर : 1962 में, जबकि हमारी फौजें चीन के साथ युद्ध कर रही थीं, तब आप प्रस्ताव लाए थे। हमारे जवान मर रहे थे, तब आप प्रस्ताव लाये थे। यह 8 नवम्बर, 1962 की बात है। *...(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मेरी अनुमति के बिना बोलने वाले किसी भी सदस्य का भाषण कार्यवाही वृत्तांत में नहीं जाएगा।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए। कृपया चुप रहिए।

[हिन्दी]

मणि शंकर जी आप बैठ जाएं। प्रधानमंत्री जी बोल रहे हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं तो किसी को टोका–टाकी नहीं करता। *...(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया शांत रहिए।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मेरे कहने का मतलब यह है कि विदेश नीति के मामले में देश में एक आम सहमति रही है। पहले भी थी, अभी भी है। लेकिन कहा गया कि आपने भारत की विदेश नीति को गिरवी रख दिया है, यह आरोप लगाया है। क्या मतलब है इसका, गिरवी रख दिया, किसको गिरवी रख दिया? *...(व्यवधान)* इसीलिए हमने फौजें भेजने से इनकार किया है। *...(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि माननीय प्रधानमंत्री को न टोकें।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया आप बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : फौजें जाने का सवाल जब चर्चा में आया, तो द्विपक्षीय वार्ता हुई है, उसमें कोई छिपी हुई चीजें नहीं हैं। उसके लिए भी संदेह पैदा किया जा रहा है कि हमारे कहने से नहीं गई है, नहीं तो चली जातीं। कैसे चली जातीं। आपके आदेश से चली जातीं। लेकिन यह बात इसका कोई मतलब नहीं है। ये बातें, विदेश नीति पर, किसने फौजें भेजने का फैसला किया है, अब मैं बताऊं वहां के लोग इकट्ठे थे, उनकी पहली राय क्या थी, बाद में राय बदली। *...(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री बसुदेव आचार्य, माननीय प्रधानमंत्री को मत टोकिए।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इसका समय नहीं है। मुझे इसी का दुख है। घरेलू मामलों में मतभेद होंगे। हमारा एक लोकतांत्रिक युद्ध चल रहा है। हम शांति से परिवर्तन चाहते हैं। आप सत्ता बदलना चाहते हैं, इसमें कोई आपत्ति की बात नहीं है। लेकिन उसमें क्या विदेश नीति के सवाल पर भी इस तरह से देश को बांटा जाएगा। *...(व्यवधान)* यह तरीका नहीं है देश को चलाने का।

इसीलिए मुझे संदेह होता है जब आप कहते हैं कि हम देश को चलाएंगे, आप चलाएं तो बहुत अच्छा है।

श्री मुलायम सिंह यादव : आप ही चला रहे हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हम नहीं चला रहे हैं, हमने तो मिली–जुली सरकार का नक्शा आपके सामने रख दिया है और वह मिली–जुली सरकार आपके विरोध के बावजूद चल रही है, पांच साल से चल रही है और लोगों को मिली–जुली सरकार पर भरोसा जमने लगा है, अच्छी बात है। कांग्रेस को भी अब मित्रों की जरूरत है। अब कौन मित्र के रूप में मिलेगा और वह कैसी मित्रता निभाएगा? कांग्रेस के रवैये में कोई परिवर्तन होगा या नहीं होगा। जो नया मित्र बनकर जाएगा वह फिर पटखनी खाएगा। मैं नहीं समझता कि ये बातें स्पष्ट हैं। मिली–जुली सरकारों युग का धर्म है। देश बड़ा है, महान है, देश की संस्कृति है, पुरानी सभ्यता है, उत्पादन के साधन हैं और देश विकास के रास्ते पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। इस समय यह स्वभाविक है कि राजनैतिक ऊहा–पोह चले। आप तय करें कि किस रास्ते पर जाना है, कौन सा रास्ता सबसे अच्छा है? लेकिन कुछ तो बुनियादी बातों ऐसी होंगी जिन पर एक राय हो। कहीं न कहीं तो मतैक्य होगा। अगर नीति में नहीं तो शब्दों के प्रकटीकरण में, भाव में, भाषा में, शैली में। अभी तो मैं पढ़कर दंग रह गया जब मैंने श्रीमती सोनिया गांधी का भाषण पढ़ा। उन्होंने सारे शब्द एक पैरे में इकट्ठे कर दिए हैं।

[अनुवाद]

"भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार ने स्वयं को अक्षम, असंवेदनशील, गैर–जिम्मेदार और एकदम भ्रष्ट सरकार सिद्ध किया है।"

[हिन्दी]

राजनैतिक क्षेत्र में आपके साथ जो कंधे से कंधा लगाकर किसी देश में काम करते हैं उनसे मतभेद होंगे। उनके बारे में यह आपका मूलयांकन है, मतभेदों को प्रकट करने का यह क्या आपका तरीका है? ऐसा लगता है कि शब्दकोष खोलकर बैठ गए और ढूंढ–ढूंढ कर शब्द निकाले गए हैं,

[अनुवाद]

अक्षम, असंवेदनशील, गैर–जिम्मेदारा"

[हिन्दी]

लेकिन यह शब्दों का खेल नहीं है। आगे कहा गया है–

[अनुवाद]

"इस सरकार ने जनता से प्राप्त जनादेश के साथ विश्वासघात किया है।"

[हिन्दी]

हम यहां लोगों द्वारा चुनकर आये हैं, और जब तक लोग चाहेंगे हम रहेंगे, आपका मैनडेट क्या होता है

[अनुवाद]

"इस सरकार ने जनादेश के साथ विश्वासघात किया है।"

[हिन्दी]

किसने आपको जज बनाया है। आप यहां तो शक्ति–परीक्षण के लिए तैयार नहीं हैं लेकिन जब चुनाव होंगे तो हो जाएंगे दो–दो हाथ। लेकिन यह क्या है? अरे सभ्य तरीके से लड़िये। इस देश की मर्यादाओं का ध्यान रखिये। गाली से समस्याओं का समाधान नहीं होगा।

अध्यक्ष महोदय, मैं जब पहली बार विदेशी मंत्री बना था और मैंने पहला भाषण दिया था, तो मुझसे पहले जितने विदेशी मंत्री हुए थे, उन सबके नामों का मैंने उल्लेख किया था। वे सब कांग्रेस के थे, लेकिन विदेश मंत्री रह चुके थे। मैं उनका सम्मान करता हूं, लेकिन अब ऐसा लगता है कि मूल्य बदल गए हैं और हम राजनीति की आपा–धापी में सारी मान्यतायें छोड़ते जा रहे हैं। मैं कहूंगा कि नाइन–पाइंट–चार्जशीट के एक–एक चार्ज का स्पष्टीकरण होना चाहिए। आप देखिऐ, किस तरह से बात कही गई है – किसानों और खेतिहर मजदूरों के लिए कुछ नहीं किया। ...*(व्यवधान)*

युवक कार्यक्रम और खेल मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री विजय गोयल) : अध्यक्ष जी, आप श्री बसुदेव आचार्य जी को बीच में बोलने से रोकिए। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री बसुदेव आचार्य जी आदत से मजबूर हैं। श्री बसुदेव आचार्य जी, हर शब्द पर मत बोलिए।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : हम नहीं बोलना चाहते हैं, हम सुनना चाहते हैं। जब मैडम सोनिया जी बोल रही थीं, उस समय यह बात क्यों याद नहीं आई? ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मैडम जब बोल रही थीं, तब भी शांति रखनी चाहिए थी। एक न्याय होना चाहिए, जैसे अभी है।

...(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, लोकतंत्र है, तो लोकतंत्र में जवाबदेही है। हम आपको चार्ज करते हैं, हम आप पर अभियोग लगाते हैं, सब आपको दंडवत करें, बाअदब बामुलाहिजा होशियार करें – ऐसा होने वाला नहीं है। वे दिन लद गए। चार्ज का मतलब क्या है? यह कौन सी भाषा है? *(व्यवधान)* अगर भाषा बदलने का फैसला कर लिया है, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन आपस की होड़ में हम एक दूसरे के देश प्रेम पर दबाव न डालें, एक दूसरे के देश प्रेम को चुनौती न दें, एक दूसरे के देश प्रेम पर सन्देह न करें। कम से कम बुनियादी मतैक्य होना चाहिए, जो नहीं हो रहा है।

विदेश नीति पर बात चली, हमें फतवा दे दिया कि हम विदेश नीति को गिरवी रख चुके हैं। किसको रख चुके हैं, यह बताइए और किस कीमत पर रख चुके हैं, यह बताइए? क्या आप समझते हैं कि भारत इतना सस्ता है कि उसको आप गिरवी रख सकते हैं। गिरवी रखने से पहले लज्जा नहीं आयेगी। इस बात का क्या मतलब है कि भारत को गिरवी रख दिया है, विदेश नीति को गिरवी रख दिया है *...(व्यवधान)* वही पोखरण की बात सामने आ रही है। क्या आप बम नहीं बनाना चाहते थे? *...(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रधानमंत्री जी को उत्तर देने दीजिए। कृपया उन्हें टोकिए मत। मैं सभी सदस्यों से अनुरोध करता हूं।

[हिन्दी]

प्रधानमंत्री जी को डिस्टर्ब मत कीजिए क्योंकि इसका यह असर होगा कि भाषण के समय सभी लोग दूसरों को भी डिस्टर्ब करेंगे। उन्हें जो कहना है, वह कहेंगे।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप यह सवाल भाषण के बाद में भी कर सकते हैं। उसे अभी कैसे कर सकते हैं? यह पद्धति नहीं है कि भाषण के बीच में बोला जाए।

...(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : क्या यह बात किसी से छिपी है कि हमारे देश में अणु–विस्फोट करने की तैयारी पहले से चल रही थी? क्या यह सही नहीं है कि कांग्रेस शासन भी उसी दिशा में जा रहा था? कारण कौन से होंगे, यह बात अलग है। हम आपस में बैठ कर कारण भी समझ सकते हैं लेकिन उसके लिए आप दबाव में आ गए। हम अमेरिका के दबाव में नहीं आए। वेंकटरमण जी ने मुझे पत्र लिखा है। वह आपके राष्ट्रपति थे।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : वह देश के राष्ट्रपति थे।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : वह हमारे भी राष्ट्रपति थे।

[अनुवाद]

"मैं सफलतापूर्वक परमाणु परीक्षण करने के लिए आपके साहस और बुद्धि की प्रशंसा करता हूं। वर्ष 1983 के आरंभ में जब मैं रक्षा मंत्री था तो पोखरण में भूमिगत परीक्षण के लिए भारी तैयारियां कर ली गई थीं और स्वयं मैं भी शाफ्ट में उतरा। लेकिन इसे अंतर्राष्ट्रीय दबाव के कारण ताक पर रख दिया गया। ऐसा ही वर्ष 1995 में हुआ।"

[हिन्दी]

आप इस दिशा में एक प्रयास कर रहे थे जो अच्छी बात है। हम इसके लिए बधाई देना चाहते हैं, लेकिन हमने किया, वह आपको पसंद नहीं आया। थोड़ा सा बड़प्पन होना चाहिए। आप सबसे पहले सब को साथ लेकर स्वतंत्रता के संग्राम में कूदे। आपने देश का नेतृत्व किया, बड़ी खुशी की बात है लेकिन कम से कम विदेश नीति के मामले में सब को एक साथ चलना चाहिए। देश पर कोई घोर संकट आएगा तो सब की एकता के बिना बात नहीं बनेगी। मुझे वह दिन याद है जब पंडित जी देश के प्रधानमंत्री थे और चीन के साथ संघर्ष हो गया था तो 26 जनवरी को रिपब्लिक डे के दिन जो परेड निकली, उसमें राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवकों को उस परेड में शामिल होने के लिए बुलाया गया था। उनके राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से मतभेद थे लेकिन देश पर खतरा है, मिल कर चलो। *...(व्यवधान)*

कल प्रियरंजन दासमुंशी जी मजाक बना रहे थे और कहा कि कदम मिला कर चलना होगा, कदम मिला कर चलना होगा।

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : हमने मजाक नहीं किया लेकिन नरेन्द्र मोदी के साथ कैसे कदम मिलेगा, आपने यह अनुभव किया होगा। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजजेयी : मेरे समझने में गलती हुई। आप तारीफ कर रहे थे लेकिन मैंने गलत समझा।

अध्यक्ष जी, इस दो दिन की चर्चा में एक काम बहुत अच्छा हुआ है। हमारे मित्र और सहयोगी श्री जार्ज फर्नान्डीज का वनवास समाप्त हो गया। ...*(व्यवधान)* अध्यक्ष महोदय, यह हंसने की बात नहीं है। वह हमारे साथी हैं, वह स्वतंत्रता सेनानी थे, ट्रेड यूनियन के नेता थे। उनके साथ इस तरह का बर्ताव करना कि वह इस संसद में बोल नही सकते, फिर बोलेंगे तो आप सब उठ कर चले जायेंगे, यह कौन सी नई अस्पृश्यता है। क्या ऐसा व्यवहार एक दूसरे के साथ होना चाहिए? लेकिन मैं जार्ज साहब को बधाई देना चाहता हूं कि वह हिम्मत के साथ डटे रहे। और उन्होंने अपमान सहे, तिरस्कार को झेला मगर अपने कर्तव्यपथ से नहीं हिले। तहलका विवाद में न तो उन पर कोई आरोप लगाया गया, न उन्हें अभियुक्त ठहराया गया और न ही उनसे कोई स्पष्टीकरण मांगा गया।

श्री बसुदेव आचार्य : कमीशन की रिपोर्ट कहां है?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : वह रिपोर्ट मेरे पास है। मगर यह बात सच है कि कांग्रेस पार्टी ने अपने रवैये में परिवर्तन किया है। यह बडप्पन की निशानी है मगर हमारे वामपंथी मित्र उठकर चले गये।

श्री सोमनाथ चटर्जी : वे लोग भी पीछे आयेंगे।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अगर दिमाग में हार और जीत रहनी है तो इस देश का भगवान ही मालिक है।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : कृपया इस सरल प्रश्न का उत्तर दीजिए। उन्होंने देश के लोगों को यह वचन दिया था कि जब तक वह आरोपमुक्त नहीं हो जाते तब तक वह वापस नहीं आएंगे। आप, उन्हें मंत्रिमंडल में क्यों लाए? कृपया इस सरल प्रश्न का उत्तर दीजिए ...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : किसको? यह गलत बात है। वे अपनी मर्जी से वापस नहीं आये हैं, हम उन्हें लाए हैं।

श्री बसुदेव आचार्य : आप क्यों लाए हैं?

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : इस मामले में गठित किया गया जांच आयोग अभी भी कार्य कर रहा है। आप उन्हें मंत्रिमंडल में वापस क्यों लाए?

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, संसद में यह बात साफ हो गई कि श्री जार्ज फर्नान्डीज़ पर मिथ्या आरोप लगाये जा रहे हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : आपने उनका इस्तीफा मंजूर कर लिया था, फिर उन्हें किसलिये लाये हैं?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उनके खिलाफ आरोप लगाया गया था, इसलिए उन्हें हटा लिया गया था। आखिर तो किसी मंत्री की नियुक्ति करना प्रधानमंत्री के अधिकार में है। वे वापस नहीं आना चाहते थे। ...*(व्यवधान)* मैं अब इस बहस में नहीं पड़ना चाहता।

श्री सोमनाथ चटर्जी : उस कमीशन की क्या मर्यादा है?

[अनुवाद]

उनके त्यागपत्र के बाद गठित किए गए जांच आयोग का कोई औचित्य नहीं है ...*(व्यवधान)*

डा. विजय कुमार मल्होत्रा : महोदय, उन्हें माननीय प्रधानमंत्री को बोलते समय परेशान करने का कोई अधिकार नहीं है। ...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री सोमनाथ चटर्जी : हम प्रधानमंत्री जी से पूछना चाहते हैं, क्लैरिफिकेशन मांग रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : प्रधान मंत्री को उत्तर देने दीजिए।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, श्री जार्ज फर्नान्डीज ने अपना दायित्व बखूबी निभाया है। रेगिस्तान हो या सियाचिन की बर्फीली घाटी हो, वे जितनी बार सरहद पर गए है, उन्होंने हमारे जवानों का हौसला बढ़ाने का काम किया है जैसा आज तक किसी रक्षा मंत्री ने नहीं किया है। बिना किसी सबूत के ...*(व्यवधान)* उन पर मिथ्या आरोप लगाना और

(श्री अटल बिहारी वाजपेयी)

फिर उन्हें बोलने न देना, क्या उनके साथ न्याय किया गया? उनके साथ अन्याय करने में आप सब लोग सामूहिक रूप से शामिल थे। आप लोग एक जार्ज से भयभीत हो गये?

[अनुवाद]

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : नहीं, हम बिल्कुल भी भयभीत नही हुए हैं। हम तो आपकी अपनी ख्याति से भयभीत हैं। ... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया आप बैठ जाइए। कुछ भी कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जायेगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, चर्चा में बहुत सारे सवाल उठाये गये हैं। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया प्रधानमंत्री जी को भाषण पूरा करने दीजिए। विपक्ष की नेता को उत्तर देने का अधिकार है और वह उन मुद्दों का उत्तर दे सकती हैं।

...(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : इसलिए मैं रिक्वैस्ट करूंगा कि टोका–टाकी नहीं करेंगे तो ठीक रहेगा।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : चर्चा में सब को बात कहने का अवसर मिलना चाहिए, यह सभी स्वीकार करते हैं। आखिर पांच साल में हमारी उपलब्धियां हैं। अगर आपको अपना दृष्टिकोण देश के सामने रखने का अधिकार है तो हम बहुमत दल के है, सरकारी पक्ष हैं, क्या हमें अपनी बात रखने का अधिकार नहीं है?

श्री सोमनाथ चटर्जी : कौन रोक रहा है?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप रोक रहे हैं, टोक रहे हैं।

डा. विजय कुमार मल्होत्रा : आप रोक रहे हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : क्या कोई इनकार कर सकता है कि पिछले पांच सालों में देश ने आर्थिक प्रगति की है। अब मैं लम्बा चिट्ठा गिनाना नहीं चाहता, आपको खुद दिखाई देता है और आप पसंद करते हैं। मैं एक और बात कह दूं कि मैं अभी चीन गया था और चीन के बाद में कलकत्ता आया तो जितने भी मार्क्सवादी या कम्युनिस्ट नेता मुझे मिले, सबने कहा कि आप चीन गये हैं, आपने जो बात की बहुत अच्छी की। ...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : कभी–कभी अच्छा काम किया है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : लेकिन यहां आने के बाद नहीं बोले। ...*(व्यवधान)* यह समय नहीं है, अंतर्राष्ट्रीय सवालों की गुत्थियां हल करने के लिए हमारी विदेश नीति में जैसा संशोधन होना चाहिए, अगर वह संशोधन कोई करता है तो उसका स्वागत होना चाहिए और अगर स्वागत नहीं होता है और जानकारी की कमी के कारण बहुत–सी गलतियां हो जाती हैं, उन्हें ठीक करने की आवश्यकता है। लेकिन इसके लिए कुछ संवाद तो होना चाहिए, उसकी चर्चा तो होनी चाहिए और चर्चा के बाद फिर यह नहीं होना चाहिए कि हमने तो ऐसा कहा था, आपने वैसा कह दिया। विश्वास के वातावरण में ऐसी चर्चा नहीं हो सकती।

मुझे थोड़े दिनों में विश्व के कई नेताओं के साथ काम करने का मौका मिला है। हम ई.यू. में एक मान्यता के रूप में हैं। हम आसियान में अपना स्थान बना रहे हैं, उनका सहयोग ले रहे हैं, उन्हें सहयोग दे रहे हैं। यह सारा क्षेत्र भारतीय संस्कृति से प्रभावित रहा है। इसकी तरफ हमने ध्यान नहीं दिया, ध्यान दिया तो कम ध्यान दिया, अब पूरा ध्यान देने की जरूरत है। विश्व की परिस्थिति बड़ी तेजी से बदल रही है। पता नहीं हमारे पड़ोस में, मैं अफगानिस्तान की तरफ इशारा कर रहा हूं, किस दिन क्या हो जाए। क्या फिर वहां आतंकवादियों का प्रभाव कायम होगा। जो भी विदेशी मुझसे मिलने आते हैं, मैं उनसे पूछता हूं कि आप क्या कर रहे हैं। खाली उस समय फौज भेज देना, आतंकवादियों को हटा देना काफी नहीं है। अब दूसरा ढांचा चाहिए, राष्ट्रीय सेना चाहिए और टुकड़ों–टुकड़ों में बंटे हुए जो नेता है, वे इकट्ठे होकर जब तक काम नहीं करेंगे, काम नहीं होगा। लेकिन कठिनाइयां हैं, हम उन कठिनाइयों की तरफ से बेखबर नहीं रह सकते हैं और हम अपने को

---

*कार्यवाही–वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

खाली बाखबर रखें और सारे देश को पता न लगे और आपको पता न लगे तो उससे भी बात नहीं बनने वाली है। इस समय सहयोग से मिलकर काम करने की जरूरत है। मैंने प्रारम्भ में कहा, फिर कहता हूं कि आर्थिक मामलों में मतभेद रहेंगे, ईमानदारी से मतभेद रहेंगे। अब हमारे कम्युनिस्ट पार्टी वाले मित्र जो हैं, वे पश्चिम बंगाल में बदल रहे है, धीरे–धीरे बदल रहे हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : आप तो गाली देकर चले आये ... *(व्यवधान)* सही नहीं किया।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हम आपके लिए एक तोहफा ले गये थे, मगर आपने लिया नहीं। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय, मैं अधिक समय नहीं लूंगा। यह प्रस्ताव अभी तो अस्वीकार हो जायेगा। हम इसमें कुछ नहीं कर सकते, आपकी मदद नहीं कर सकते। लेकिन आप अपनी मदद कीजिए। बंटवारे की नौबत नहीं आनी चाहिए और हम एक वोट से हारे थे, वह भी आपको याद होगा।

श्री सोमनाथ चटर्जी : मायावती के लिए हारे थे।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मायावती के लिए नहीं ... *(व्यवधान)* एक वोट से कांग्रेस से हारे थे और हमने कहा था कि इसी एक वोट से हम फिर जीत कर आयेंगे। आपने सुना नहीं, आपने माना नहीं और हम जीतकर आ गए। अभी चुनाव आ रहे हैं, संग्राम है। मैं अपने मित्र मुलायम सिंह जी से कहना चाहता हूं कि जो कांड हुआ, उसके बारे में हमने जानकारी प्राप्त की है और केन्द्र सरकार उसमें शामिल नहीं है, प्रदेश सरकार की कारस्तानी है। उस पर रोक लगाने की जरूरत है।

श्री श्रीप्रकाश जायसवाल : प्रदेश सरकार की कारस्तानी कह रहे हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : कारस्तानी अच्छा शब्द है। इसमें कोई बुरी बू–बास नहीं है।

[अनुवाद]

श्रीमती सोनिया गांधी (अमेठी) : अध्यक्ष महोदय, जब प्रधानमंत्री ने अपना हस्तक्षेप शुरू किया तो उन्होंने कहा कि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि अविश्वास प्रस्ताव ऐसे समय में लाया गया जब सरकार स्थिर है और यह प्रस्ताव तभी लाया जाना चाहिए जब सरकार गिरने के कगार पर हो .. *(व्यवधान)*

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : प्लीज़, विपक्ष की नेत्री को सुनिये।

...(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

[हिन्दी]

श्री कीर्ति आजाद : मणि शंकर अय्यर जी से जवाब तो दिलवा दीजिए।

[अनुवाद]

श्रीमती सोनिया गांधी : ऐसे कई उदाहरण हैं जब अविश्वास प्रस्ताव विभिन्न सरकारों की असफलताओं को उजागर करने के लिए लाये गये न कि सरकार बदलने हेतु। हम प्रधानमंत्री को ऐसे उदाहरण दे सकते हैं। अपराह्न में दो उदाहरणों को उद्धृत किया गया।

मैं प्रधानमंत्री की यह बात समझती हूं जो उन्होंने कही है कि अविश्वास प्रस्ताव में प्रयुक्त शब्द उनकी पसंद के नहीं हैं। लेकिन निश्चित तौर पर विपक्ष द्वारा लाये जाने वाले प्रस्ताव के शब्द विपक्ष की पसंद के अनुसार होते हैं।

प्रधानमंत्री ने इस पर भी आश्चर्य व्यक्त किया कि हम अर्थव्यवस्था की स्थिति पर टिप्पणी क्यों कर रहे हैं। मैं कहना चाहती हूं कि यदि अर्थव्यवस्था में इतनी अच्छी प्रगति हो रही है तो ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : अभी वह विषय नहीं है। अभी भाषण सुनिये। मैंने विपक्ष की नेत्री को इजाज़त दी है। आप बैठिए।

...(व्यवधान)